साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

हिंदी भाषा के विकास में अमीर खुशरो का योगदान

सुनीता ,शोधार्थी हिंदी विभाग, महर्षि दयानद, विस्वविद्यालय, रोहतक

शोधसार: हिंदी भाषा के विकास में अमीर खुशरो खड़ी बोली के पहले प्रमुख कवि माने जाते हैं। वे १४वीं शताब्दी के आरम्भ में ठीक उस भाषा का प्रयोग कर रहे थे जैसी खड़ी बोली आधुनिक काल में दिखती है। डॉ० रामकुमार 'हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास में लिखते हैं कि अमीर खुसरो जन साधारण की भाषा खड़ी बोली को साहित्यिक रूप देने में सबसे पहले सफल हुए। प्राम्भिक हिंदी को खुशरो ने 'हिंदवी' नाम दिया। इस शब्द का प्रयोग उन्होंने उत्तर भारत में प्रचलित आम भाषा के लिए किया था। खुशरो ने दिल्ली के आसपास की जिस विकसित भाषा को 'देहवली' कहा, वह वस्तुत:हिंदवी या हिंदी ही थी। हिन्दी भाषा से उनका गहरा लगाव था। थे। वे अपनी फारसी रचना 'गुर्रतुल कमाल' की भूमिका में लिखते हैं- चूं गन तूती ए हिन्दम अजरासत पुर्सी। जगन हिन्दवी पुर्स ता नग्ज गोयम॥ अर्थात् सही पूछो तो मैं हिन्दी का तोता हँ। यदि तुम मुझसे मीठी बातें करना चाहते हो तो हिन्दवी में बातें करो। अमीर खुसरो के नाम से हिन्दी साहित्य में अनेक पहेलियां, कहमुकरियाँ, दोहे, गीत और कव्वाली आदि प्रचलित हैं। उनमें भी कहीं-कहीं ब्रजभाषा की झलक है, पर गीतों और दोहों की भाषा ब्रज या मुख प्रचलित काव्यभाषा ही है। खुसरो हिन्दी साहित्य के आदिकालीन कवि है। इस काल की रचनाएं अधिकांशत: धर्म तथा राजनीति मुद्दों पर आधारित थीं। लेकिन अमीर खुसरो इन प्रवृत्तियों को किनारे कर मनोरंजन प्रधान कविताएं लिखीं। राजकुमार वर्मा के अनुसार- 'चारण कालीन रक्तरंजित इतिहास में जब पश्चिम के चरणों की डिंगल कविता उध्दत स्वरों में गूँज रही थी और उनकी प्रतिध्वनि और भी उग्र थी, पूर्व में गोरखनाथ की गंभीर धार्मिक प्रवृत्ति आत्म शासन की शिक्षा दे रही थी, उस काल में अमीर खुसरो की विनोदपूर्ण कविता हिन्दी साहित्य के इतिहास की महान निधि है।' अमीर खुसरो का काव्य सरल एवं स्वभाविक है। उसमें पाण्डित्य प्रदर्शन एवं कृत्रिमता का अभाव है। उनके काव्य में ब्रज भाषा मिश्रित खड़ी बोली और ठेठ बोलचाल खड़ी बोली दोनों का मिश्रण है।

कुंजी शब्द: हिन्दवी, प्रवृत्तियों, 'देहवली', जनमानस, कहमुकरियाँ, पाण्डित्य,

आमिर खुसरो का जीवन परिचय एव सहित्यिक योगदान:

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

एक बार एक रहगीर ने पनिहारियों से पानी पिलाने का अनुरोध किया। पहली पनिहारी ने खीर पर, दूसरी ने चरखे पर, तीसरी ने कुत्ते पर और चौथी ने ढोल पर दोहा बनाकर सुनाने की इच्छा व्यक्त की। राहगीर ने उन चारों पनिहारियों की अलग-अलग इच्छा को तुरन्त एक दोहे में व्यक्त कर इस तरह प्रकट किया -

खीर पकाई जतन से, चरखा दिया चला। आया कुत्ता खा गया, तू बैठी डोल बजा।।

उक्त दोहा काव्य जगत में 'ढकोसला'नाम से चर्चित हुआ,इस ढकोसला के रचनाकार रहागीर थे आमिर खुसरो। आमिर खुसरो का जन्म १२५३ में उत्तर प्रदेश में हुआ। आठ की अवस्था में ही खुसरो के पिता की मृत्यु हो गई। अत:खुसरो दिल्ली आकर वह अपने नाना के पास रहने लगे। खुसरो शीघ्र ही तत्कालीन प्रसिद्ध विद्वानों के सम्पर्क में आ गए। अमीर खुसरो मूलतः फारसी के कवि थे तथा इसी भाषा में अनेक रचनाएँ भी की लेकिन इसके साथ ही उन्हें अपने देश से प्रेम था अतः अपनी बोली (यहाँ के सामान्य लोगों द्वारा बोली जाने वाली) में भी उन्होंने रचना की. उन्हें अपनी मातृभाषा हिन्दवी (हिन्दी) से गहरा प्रेम था. अपने दीवान (काव्य) 'गुरर्तुलकमाल' की भूमिका में लिखते हैं-

तुर्क हिंदुस्तानियम मन हिन्दवी गोयम जबाब, शक्र मिस्त्री नदारम कज़ अरब गोयम सुखन।

खुसरो ने ऐसे काल में हिन्दी रचनाएं की जिस समय सर्वत्र फारसी की धाक थी। खुसरो हिन्दी साहित्य के आदिकालीन कवि है। इस काल की रचनाएं अधिकांशत: धर्म तथा राजनीति मुद्दों पर आधारित थीं। लेकिन अमीर खुसरो इन प्रवृत्तियों को किनारे कर मनोरंजन प्रधान कविताएं । अमीर खुसरो की कुछ हिन्दी रचनाओं को कुछ विद्वान गंभीर साहित्यिक रचनायें नहीं मानते। आचार्य रामचंद्र शुक्ल खुसरो की रचनाओं को फुटकल खाते में डालते हैं। उनका मानना है कि खुसरो की रचनाओं में जन साधारण की बोल-चाल भाषा का ज्ञान मिलता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कहना है- वीरगाथा काल के समाप्त होते-होते हमें जनता की बहुत कुछ असली बोलचाल और उसके बीच कहे सुने वाले पद्यों की भाषा के बहुत कुछ असली रूप का पता चलता है। पता देने वाले हैं दिल्ली के खुसरो मियाँ और तिरहुत के विद्यापति।

अमीर खुसरो की हिन्दी भाषा में कितनी काव्य रचनाएँ है यह निश्चित तौर पर नहीं मालूम है। क्योंकि खुसरो का हिन्दी काव्य लोक में प्रचलित मौखिक परम्परा से प्राप्त होता है। उनके हिन्दी काव्य की कोई प्राचीन पाण्डुलिपि भी नहीं मिलती है। इसलिए डॉ. ज्ञानचंद्र जैन का कहना है, 'चूंकि खुसरो ने हिन्दी कलाम को मदून नहीं किया इसलिए वह सदियों तक सीना-बसीना चला आया, इसका कोई कदीम नुस्खा नहीं मिलता। इसलिए एक तरफ तो इसकी जुबान मुसलसल इस्लाह तहरींक के सबब मौजूदा दौर के मुताबिक हो गई। दूसरी तरफ इसमें कसरत से इल्हाक हो गया।

अमीर खुसरो हिन्दी काव्य का उल्लेख सर्वप्रथम शिप्रंगर ने किया है। सैयद शम्सुल्लाह कादरी को शिप्रंगर के १८५४ ई. में प्रकाशित लेख से सूचना मिली थी कि अवध के बादशाहों के पुस्तकालयों में जो मोतीमहल तथा

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

तोपखाना में थे उनमें अमीर खुसरो की दो सौ पहेलियाँ तथा इसके अतिरिक्त एक संग्रह में फारसी मिश्रित गजल तथा मुकरियाँ आदि मौजूद है। खुसरो की हिन्दी रचनाओं को मौलाना अमीन अब्बासी चिरमाकोठी ने 'जवाहर खुसखी' नाम से १९१८ ई. में अलीगढ़ से संपादन किया था। हिन्दी के ब्रजरत्न दास ने सं. में काशी है। २०३० नागरी प्रचारिणी सभा से संपादित किया था। इन संग्रहों में पहेलियां, कहमुकरियां, दोहे, निस्बतें, दो सुखने, ढकोसले आदि संकलित हैं। आज खुसरो की हिन्दी रचनाओं में खालिकबारी, दोहे, पहेलियां, कहमुकरियां, ढकोसले, गीत, कव्वाली, दो सुखने, निस्बते, गज् ालें, फारसी, हिन्दी मिश्रित छंद तथा फुटकल छंद आदि प्राप्त होते हैं।

अमीर खुसरो ने फारसी तथा हिन्दी भाषा में मिश्रित कविताओं की भी रचना की थी। इस प्रकार की उनकी कुछ कवितायें प्राप्त हैं जिनमें पहला वाक्य फारसी का तथा दूसरा वाक्य हिन्दी सरा वाक्य हिन्दी भाषा का है। खुसरो ने अपने फारसी साहित्य में भी कुछ हिन्दी शब्दों का प्रयोग किया है। वे अपनी मसनवी तुगलकनामा में लिखा है-
चु बकुशदंद तीर-ए-बेंखता रा, बाजारी गुफ्त है है तीर मारा॥

जनमानस में खुसरो के हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक पहलेलियां प्रसिध्द हैं। पहेली में गोपनीयता, सांकेतिकता और प्रतीकात्मकता की प्रवृत्ति लक्षित होती है। पहेली वास्तव में प्रस्ताव के रूप में होने वाली एक प्रकार का प्रश्नात्मक उक्ति या कथन है जिसमें किसी चीज या बात के लक्षण बतलाते हुये अथवा घुमाव-फिराव से किसी प्रसिध्द बात या वस्तु का स्वरूप मात्र बतलाते हुए यह कहा जाता है कि वह कौन सी बात या वस्तु हैं।

पहेलियों में यथार्थ में किसी वस्तु का वर्णन होता है तथा यह ऐसा वर्णन है जिसमें अप्रकृत के द्वारा प्रकृत का संकेत होता है। पहेली में वस्तु को सुलझाने वाले उपमानों से निर्मित शब्द चित्रावली होती है, जिसमें चित्र प्रस्तुत करके पूछा जाता है कि यह किसका चित्र है।

अमीर खुसरो ने दो प्रकार की पहेलियाँ लिखी हैं- 1. बूझ पहेली 2. बिन बूझ पहेली। बूझ पहेली में उत्तर पहेली के अंदर ही रहता है। यह उत्तर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में पहेली के अंदर ही बूझ लिया जाता- साथ उनकी पहेलियों में खड़ी बोली का प्रांजल रूप देखा जा सकता है।

एक थाल मोती से भरा । सबके सिर पर ओंधा घरा ॥ चरो ओर वह थाली फिरे । मोती उससे एक न गिरे ॥

अमीर खुसरो के हिन्दी साहित्य में कहमुकरियां लिखने का सर्वप्रथम स्थान है। यह भी एक तरफ की पहेली ही होती है जिसमें सखी-सहेलियां आपस में मिलकर हास-परिहास करते हुए एक-दूसरे से पूछती हैं। यह लोक जीवन में अर्थ साजन होता है। लेकिन जैसे ही सखी उसका उत्तर, साजन बताती है, दूसरी सखी मुकर जाती है और अंत में भिन्न अभिप्राय व्यक्त करती खुसरो ने कुछ इस प्रकार की कवितायें भी लिखीं थीं जिनको ढकोसले या अनमोलियाँ कहा जाता है। खुसरो का एक ढकोसले का उदाहरण है-

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

भैस चढ़ा बबूर पर-लप मलूर खाय।

पोंछ उठा के देखा तो पूरन माँसी के तीन दिन॥

अमीर खुसरो ने वैद्यराज खुसरो के रूप में काव्यात्मक घरेलू नुस्खे भी लिखे हैं-

हरड़-बहेड़ा आँवला, घी सक्कर में खाए!हाथी दाबे काँख में, साठ कोस ले जाए!!

प्रतिदिन तुलसी बीज को, पान संग जो खाए!

रक्त-धातु दोनों बढ़े, नामर्दी मिट जाय!!

इस प्रकार उनकी भाषा आधुनिक काव्यभाषा के रूप में हिंदी के पूर्णत: प्रतिष्ठित होने का संकेत देती है। अमीर खुसरो की प्रसिद्धि हिंदी जगत में उनके द्वारा हिंदी में लिखी गई पहेलियों, मुकरियों,निसबतों और ढकोसलों के कारण मानी है। हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में ब्रज, अवध और कुरु इन तीनों जनपदों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। खुसरो इन तीनों जनपदों की संस्कृति से परिचित थे,और इन पर साहित्य लिखते थे। आवश्यकता यह है कि खुसरो ने हिन्दवी में रचना की थी। यह अवश्य है कि उसका रूप समय के प्रवाह में बदलता आया हो। आवश्यकता यह है कि खुसरो की हिन्दी-कविता का यथासम्भव वैज्ञानिक सम्पादन करके उसके प्राचीनतम रूप को प्राप्त करने का यत्न किया जाय। सांस्कृतिक और भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के लिए उसका मूल्य निस्सन्देह बहुत अधिक है।

सन्दर्भ सूची:

- हिंदी साहित्य का इतिहास पेज कुमार सर्वेश ,५२ सार्थक प्रकाशन
- अमीर ख़ुसरो - भारतकोश, ज्ञान का हिन्दी महासागर।
- भारत की महान विभूति ,डॉ परमानन्द पांचाल, सार्थक प्रकाशन ,स्टार पुब्लिकेशन।
- हिंदी साहित्य का इतिहास,अध्याय: लौकिक साहित्य : अमीर खुसरो एवं विद्यापति ,राहुल सिद्धार्थ